શ્રી શત્રુંજય મુક્તિ સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસક્રમ

C/o. શ્રી વીરબાઈ પાઠશાળા, નાની શાક માર્કેટ પાસે, પાલીતાણા-૩૬૪૨૭૦

સમ્યગ્જ્ઞાન પરિચય

અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર

सितंबर - २०१९

४

એનરોલમેન્ટ નંબર

ગામ हिन्दी

વિદ્યાર્થીનું નામ

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા

(૧)	ज्योतिर्मय
(૨)	विशेषोपयोग
(૩)	श्रुतज्ञान
(૪)	निर्जरा
(૫)	कलिरवावासरूप
(૬)	शीलव्रत
(૭)	श्री अजितनाथ
(૮)	वासक्षेत्र
(૯)	दर्शन मोहनीय
(૧૦)	चरण सेवा
(૧૧)	दुष्पथ
(૧૨)	एकाग्रचित्त से
(૧૩)	पाँच भूतो
(૧૪)	निद्रा निद्रा
(૧૫)	देवकुरु उत्तरकुरु
(૧૬)	भविय
(૧૭)	अचक्षुदर्शनावरणीय
(૧૮)	वायुभूति
(૧૯)	परमात्म दर्शन / दर्शन की भावना
(૨૦)	क्षायिक

પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં

(૧)	स्वदारा संतोष
(૨)	दर्शन मोहनीय
(૩)	युगलिया / युगलिक
(૪)	शांतिनाथ
(૫)	परविवाहकरण
(૬)	कुलाचार
(૭)	वेदक
(૮)	दैविक समृद्धि
(૯)	परिग्रह
(૧૦)	थिणद्धि
(૧૧)	वैशाख सुद ११
(૧૨)	श्री नेमिनाथ
(૧૩)	ज्ञान, दर्शन, चारित्र
(૧૪)	धरिम
(૧૫)	मोक्ष
(૧૬)	सिद्धी
(૧૭)	वाणी वाले
(૧૮)	देश के
(૧૯)	मिश्र
(૨૦)	मदिरा
(૨૧)	प्रकार
(૨૨)	चित्र
(૨૩)	श्रेष्ठ
(૨૪)	खड़े खड़े
(૨૫)	क्षायिक
(૨૬)	सात
(૨૭)	तपाया
(૨૮)	तत पश्चात
(૨૯)	वेदनीय
(૩૦)	कल्याणकारी

Note: items (૧૬)–(૩૦) of પ્રશ્ન-૨ are printed as (૫)–(૨૦) in the second column of the form.

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ

(૧)	निर्जरा
(૨)	कलिरवावासरूप
(૩)	यमक
(૪)	गणितपद / क्षेत्रफल

પ્રશ્ન-૪ જોડકાં જોડો

(૧)	८	(૬)	५
(૨)	७	(૭)	२
(૩)	९	(૮)	६
(૪)	१	(૯)	३
(૫)	१०	(૧૦)	४

પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ / પ્રશ્ન-૬ ✓ કે ✗

	પ્રશ્ન-૫		પ્રશ્ન-૬
(૧)	१०००	(૧)	✗
(૨)	४	(૨)	✓
(૩)	८४२१ वें	(૩)	✗
(૪)	६	(૪)	✗
(૫)	४	(૫)	✓
(૬)	६४ हजार	(૬)	✓
(૭)	२८	(૭)	✗
(૮)	५१२	(૮)	✗
(૯)	५७	(૯)	✓
(૧૦)	७	(૧૦)	✓

પ્રશ્ન-૭ આ વાક્ય કયા પાને છે તે નંબર

(૧)	१७
(૨)	१२
(૩)	१९
(૪)	२२
(૫)	२
(૬)	६
(૭)	१०
(૮)	२३
(૯)	८
(૧૦)	१६

પ્રશ્ન ૧- મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૨- મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૩- મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૪- મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૫- મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૬- મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૭- મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૮- મેળવેલ ગુણ	કુલ ગુણ

તપાસનારની સહી

રીમાર્ક

प्रश्न - ८

१. मैथुन का त्याग करना, इसे शीलव्रत या ब्रह्मचर्य व्रत कहते है। इसव्रत में यथाशक्ति अपने शक्ति के अनुसार पालन करने का होता है। जिस श्रावक की पूर्ण शक्ति या पूर्ण श्रद्धा होती है वह अपनी तथा परायी स्त्रियों को भोगने का त्याग करता है। परंतु जिसमें इतनी शक्ति नही होती है, तो भी अपनी पंच की साक्षी में विवाहित स्त्री में संतोष रखना और परायी स्त्री का विवर्जन करना, इस तरह शीलव्रत होता है। इसके दो विभाग है। देश से और सर्व से। साधु-साध्वी भगवंत ब्रह्मचर्य की नऊ गुप्ती का पालन करते है और श्रावकों को स्वदारा-संतोष व्रत बताया गया है।

२. निद्रा के प्रकार इस तरह से-सहजता से धीमी आवाज से सरलता से जाग आती है वो निद्रा कही जाती है जो निद्रा का पहला प्रकार है। दुसरा-निद्रानिद्रा-बहुत जगाने के पश्चात भी मुश्किल से जागृत होना वह निद्रा निद्रा। तिसरा प्रकार प्रचला-खड़े खड़े या बैठे बैठे निद्रा लेना वह प्रचला कहलाती है। चौथा प्रकार प्रचला प्रचला-प्रचला से भी गहरी-चलते चलते भी नींद लेना यह प्रचला प्रचला है। पाँचवा प्रकार है थिणद्धी निद्रा-दिन मे चिंतित कार्य हो, उसे करने की स्वयं की शक्ति न हो वह कार्य रात्री के समय नींद में करे, फिर भी जागृत न हो, ऐसी निद्रा थिणद्धी निद्रा है। वज्रऋषभनाराच संघयण वाले को यह निद्रा जब आती है तब उसमे अर्धचक्रवर्ती का बल होता है।

३. वायुभूति यह श्री इन्द्रभूति से १ वर्ष और अग्निभूति से २ वर्ष छोटे भाई थे। उनका जन्म स्वाति नक्षत्र में हुआ था। मगधदेश का गोब्बर नाम का गाम उनकी जन्मभूमि थी। उनकी जाती ब्राह्मण थी। अपने कुलाचार अनुसार उन्होंने वेद-वेदांतो का अभ्यास किया। श्रुति-स्मृति, वेद-पुराण, निघंटु-छंद, न्याय व्याकरण ई विद्याओमें पारंगत हुये थे। अनेको को अभ्यास या अध्यापन कराते हुये वो पुरुष शिष्यों के गुरु बने। उनका व्यवसाय अध्ययन-अध्यापन ही था। उन्होंने अनेक शास्त्रार्थ सभाओमे भाग लिया था। और अनेकोंको वाद-चर्चा मे हराकर वाद-विजेता की उपाधी उन्होंने पायी थी।

४. मंदिर की दाहिनी की शाखा के आश्रय से दाहिनी बाजूसे मंदिरमें प्रवेश करना चाहिए। बायी बाजू की शाखा को आश्रय कर स्त्रियोंने बायी बाजूसे प्रवेश करना चाहिए। मंदिर के द्वार के आगे के सोपान पर स्त्री अथवा पुरुषने दाहिना पैर रखकर ही ऊपर चढ़ना और निसिही बोलकर मंदिर मे प्रवेश करना। "नमो जिणाणं" बोलकर, आधा झुककर मूलनायक को प्रणाम करना चाहिए। फिर दो हाथ जोड़कर, अविरक्षा का उपयोग रखते, भगवान को अपनी दाहिनी ओर रखकर, ज्ञान-दर्शन-चारित्र की प्राप्ती के लिए तीन प्रदक्षिणा देना। फिर हर्षोल्लास से मुखकोष बांधकर भगवान के प्रतिमा से अगले दिन का निर्माल्य उतरना। मोरपंख से प्रभुकी प्रमार्जना करके निर्माल्य को पवित्र स्थानपर जयणा से डालना।

५. श्री शांतिनाथ भगवान महाप्रभाविक महाचक्रवर्ती थे। शांतिनाथ भगवान बहत्तर हजार श्रेष्ठ नगर तथा बड़ी समृद्धिवान दुकानवाले श्रेष्ठ नगर और देशोंके पति थे। बत्तीस हजार मुकुटबद्ध राजा इनके पीछे चलनेवाले थे। शांतिनाथ भगवान श्रेष्ठ चौदह रत्नो, नौ निधान और चौसठ हजार सुंदर युवतीओंके पति थे। चौर्यासी लाख घोड़े, चौर्यासी लाख हाथी, तथा चौर्यासी लाख रथ के, शांतिनाथ भगवान स्वामी थे। श्री शांतिनाथ भगवान छियानवे करोड़ गांव के स्वामी थे। श्री शांतिनाथ भगवान कुरुदेश में स्थित हस्तिनापुर नगरी के प्रथम राजा थे।